ISSN 2229-4406

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

(UGC Approved, Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

Year -XV, Issue - XXX, Vol. - II (Hindi) | Impact Factor 6.70 (GRIFI) | March 2025 To Aug. 2025

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki

Tq. & Dist. Dharashiv - 413508 (MS)

(NAAC Reaccredited A+ Grade with CGPA 3.36)

One Day National Seminar

Date : 20/ 03/2025

on

'राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण आणि भाषाभिमुख रोजगाराच्या संधी'

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भाषाभिमुख रोजगार के अवसर'

National Education Policy and Language Oriented Job Opportunities

Editor In Chief
Prin. Dr. Haridas Fere

Co - Editor
Dr. R. V. Kamble

Co - Editor
Dr. R. P. Jadhav

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki

Tq. & Dist. Dharashiv - 413508 (MS)

(NAAC Reaccredited A+ Grade with CGPA 3.36)

Affiliated to
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhajinagar (MS)

One Day National Seminar

on

'राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण आणि भाषाभिमुख रोजगाराच्या संधी'

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भाषाभिमुख रोजगार के अवसर'

National Education Policy and Language Oriented Job Opportunities

(20th March 2025)

Editor in Chief
Prin. Dr. Haridas Fere

Co - Editor
Dr. R. V. Kamble
Dr. R. P. Jadhav

Organized by
Department of Hindi

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Universal Research Analysis
ISSN Number :	22294406
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Multidisciplinary
Publisher:	Jyotichandra Publication
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Multidisciplinary

Print

IMPACT FACTOR
6.70

ISSN 2229-4406

UGC Approved International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXX, Vol. II
Year - XV (Half Yearly)
March 2025 To Aug. 2025

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 8484818000
9423346913 / 9503814000
7276305000 / 7276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

Price : ₹ 300/-

CHIEF EDITOR

Dr. Haridas Fere
Principal
Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki
Tq. & Dist. Dharashiv. (M.S.)

CO- EDITOR

Dr. R. V. Kamble
Head., Dept. of Hindi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

Dr. R. P. Jadhav
Dept. of Hindi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. B. N. Deshmukh
Dept. of Marathi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

J. A. Lokhande
Asso. Prof. Dept. of Marathi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

Dr. M. D. Shrimangale
Head., Dept. of English
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

S. V. Jogdand
Asst. Prof. Dept. of English
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

Dr. Pradeep Ingale
IQAC Co - ordinator
Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki.
Tq. & Dist. Dharashiv. (M.S.)

INDEX

अ. क्र.	पेपरचे नांव	पृष्ठ क्र.
१	हिंदी भाषा और अनुवाद क्षेत्र में रोजगार **प्रधानाचार्य डॉ. मुकुंद गायकवाड**	१
२	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हिंदी भाषा **डॉ. सतीश यादव**	५
३	हिंदी भाषा और अनुवाद क्षेत्र में रोजगार **डॉ. रणजीत जाधव**	८
४	मुद्रित माध्यम अखबार के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं **प्रो. अशोक मर्डे**	११
५	हिंदी भाषा और प्रसार माध्यमों में रोजगार **डॉ. राम दगडू खलंग्रे**	१४
६	प्रसार माध्यमों की उपयोगिता **डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी**	१८
७	हिंदी भाषा और समाज भाषा विज्ञान **अरुणा गौतम सपकाळ, डॉ. नानासाहेब गोरे**	२२
८	हिंदी भाषा और विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार **प्रा. शफीक लतीफ चौधरी**	२६
९	राष्ट्रीय शिक्षा निति और अनुवाद के माध्यम से रोजगार **डॉ. मंत्री रामधन आडे**	३०
१०	हिंदी भाषा और रोजगार के अवसर **डॉ. सूर्यकांत माधवराव दलवे**	३६
११	हिंदी भाषा में रोजगार : अनुवाद और पत्रकारिता **डॉ. विनोद श्रीराम जाधव**	३९
१२	अनुवाद की कुशलता एक : रोजगार के अवसर अनेक **डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'**	४५
१३	हिंदी भाषा और रोजगार के अवसर **डॉ. गजानन हरिराम बने**	५०
१४	राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० : कौशल विकास और रोजगार की संभावनाएं **डॉ. आर. एम.खराडे**	५३
१५	हिंदी भाषा और अनुवाद क्षेत्र में रोजगार **डॉ. विद्या खाडे, डॉ. प्रकाश खुळे**	५७
१६	हिंदी भाषा और रोजगार के सुअवसर **डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे**	६०
१७	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) और हिंदी में रोजगार के अवसर **डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे**	६५
१८	हिंदी साहित्य : अभिव्यक्ति से बाजार तक **डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे**	७०
१९	शैलीविज्ञान का हिंदी साहित्य में महत्त्व : नई शिक्षा निती २०२० के परिप्रेक्ष्य में **रणजित जोतीराम वरपे, डॉ. केशव महादेव क्षीरसागर**	७४
२०	हिंदी भाषा और अनुवाद में रोजगार की संभावनाएं **डॉ. एस. एस. कदम**	७८

12

अनुवाद की कुशलता एक : रोजगार के अवसर अनेक

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
हिंदी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
धाराशिव

Research Paper - Hindi

आज के युग में सबसे बड़ी समस्या आजीविका अथवा रोजगार की समस्या है। भले ही वैश्वीकरण के द्वारा नये-नये क्षेत्रों में रोजगार के अनेक अवसर दिखाई देते हैं, किन्तु इन अवसरों को प्राप्त करने के लिए जिन कुशलताओं को अर्जित करने की आवश्यकता है, वे कुशलताएँ सहज उपलब्ध हो ही नहीं सकती। प्रत्येक क्षेत्र में उच्च स्थान की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। यदि आपके पास निवेश करने हेतु अधिक पूँजी नहीं है, व्यवसाय का अधिक अनुभवनहीं है, बाजार में साख नहीं है, किसी गॉडफादर का वरदहस्त प्राप्त नहीं है, तो ऐसे में किसी भी प्रकार का पेशाआपको सफल बना नहीं सकता, यही सत्य है। किन्तु यदि आपमें भाषा तथा भाषा-विज्ञान सम्बन्धी कुशलताएँ है, तो बिना पूँजी का व्यवसाय आप स्वयं निर्माण कर सकते हैं। साथ ही अनेकों को सुलभ रोजगार के अवसर भी प्रदानकर सकते हैं। साथ ही अनेकों को सुलभ रोजगार के अवसर भी प्रदान कर सकते हैं। भाषागत कुशलताओं में श्रवण, सम्भाषण, पठन (वाचन), लेखन, प्रस्तुतीकरण, सूत्रसंचालन (मंच संचालन), कविता लेखन, कविता-पाठ, विधा-रूपान्तरण, नाट्यभिनय आदि के साथ-साथ अनुवाद करना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण कुशलता है। इन कुशलताओं केद्वारा कोई भी युवा व्यक्ति बेरोजगारी की समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है।

वास्तव में भाषाविज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र में अनुवाद का कार्य महत्वपूर्ण अध्याय है। दरअसल भाषाविज्ञान कार्यक्रम का एक भाग अनुवाद है। अतः भाषाविज्ञानी को अनुवाद की तकनीकी जानकारी दी जाती है और उसी के अनुसार उन्हें उचित ढंग से प्रशिक्षित किया जाता है। सरकारी, अ-सरकारी, सार्वजनिक क्षेत्रों के साथ-साथ एवं निजी क्षेत्रों में भी पेशेवर (व्यावसायिक) अनुवादकों की नियुक्ति की जाती है। उपर्युक्त प्रशिक्षण से भाषा-विज्ञानी अनुवादककार्य करने की योग्यता प्राप्त करते हैं तथा सफल अनुवादक के तौर पर कार्य करने में सक्षम होते हैं।

अनुवाद क्या है? इस विषय को समझने से पूर्व हम अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति से परिचित होने का प्रयास करेंगे। 'अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति 'वद्' धातु के साथ 'अनु' उपसर्ग एवं 'टाप्' प्रत्यय के योग से होती है। 'वद्' का अर्थ है 'कहना' तथा 'अनु' का अर्थ है 'पीछे'। अतः 'अनुवाद' का अर्थ है 'पीछे कहना'।

अनुवाद का अर्थ है :

"एक भाषा की पाठ्य-सामग्री का दूसरी भाषा की पाठ्य-सामग्री मेंप्रतिस्थापित होना। अर्थात् यह एक कला भी है और विज्ञान भी! अर्थान्तरण के इसके सन्दर्भ सीमित भी होते हैं और व्यापक भी। इसीलिए अनुवादक को यह चाहिए कि, वह बहुभाषिक हो। अथवा कम से कम उसका दो भाषाओं परतो अधिकार हो।" व्यापक दृष्टि से अनुवाद का विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि, दो या दो से अधिक भाषाओं का सम्यक ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि अनुवाद विश्व का सबसे प्राचीन भाषायी व्यवसाय है। जिसकी इक्कीसवीं सदी में अत्यन्त आवश्यकता है। इसका मूल कारण यह है कि बीसवीं सदी में ही भाषा सम्पर्क अधिक मात्रा में उभरकर आया है, जिसका मूल कारण आर्थिक और राजनीतिक नीतियों में छिपा है।

आज का युग भूमण्डलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण का युग है। इस युग में सारी दुनिया एक बन गई है, जिसे मार्शल मॅकलूहान हे "विश्वग्राम' (ग्लोबल विलेज़) के रूप में परिभाषित किया है। समय गतिशील और परिवर्तनशील होता है। समय की इन विशेषताओं का प्रभाव वैयक्तिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर होना स्वाभाविक ही है। अतः परिवर्तनशील परिवेश में छात्रों के सफलभवितव्य की ओर दृष्टिपात करना अनिवार्य है। अर्थप्राप्ति के लिए अनेक साधन हो सकते है, किन्तु कला संकाय के भाषा विषय या स्नातक स्तर के किसी भी विषय के छात्रों के लिए अनुवाद एक ऐसी सीढ़ी है, जिसके सहारे से छात्र अच्छी तरह से रोजगार प्राप्त कर सकता है। अनुवाद वर्तमान युग में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है। आज दुनिया भर में शायद ही ऐसा क्षेत्र हो जहाँ अनुवाद की आवश्यकता नहीं है। अर्थात् समाज के गतिमान विकास मेंअनुवाद की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर :-

1) स्थानीय दर्शनीय स्थानों के मार्गदर्शक के रुप में :-

आज के युग में भारतवर्ष का प्रत्येक राज्य पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है। प्रत्येक प्रान्त या प्रदेश की कोई-न-कोईविशेषता होती है। कश्मीर की अपनी विशेषता है। राजस्थान की अपनी विशेषता है। तामिलनाडू, केरल, कर्नाटक,मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात, गोवा, सिक्किम, नागालॅण्ड, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा,पॉण्डेचेरी, आसाम, हिमाचल प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, उत्तरांचल, हरियाणा, पंजाब आदि प्रान्तों की अपनी-अपनीसंस्कृति है। प्रत्येक प्रदेश में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर सकनेवाले अनेक स्थान हैं, जो धार्मिक, सामाजिक,ऐतिहासिक, पर्यावरणीय, कृषि सम्बन्धी महत्व रखते हैं। उदा. ताजमहल, खजुराहो के मन्दिर, कश्मीर की वादियाँ,कर्नाटक के जंगल, जयपुर का हवामहल आदि।

हमारा महाराष्ट्र भी विविध सांस्कृतिक धरोहरों और प्राकृतिक प्रेक्षणीय स्थानों को संजोये हुए है। जैसे - अजन्ता,एलोर, एलिफण्टा, पाण्डव, धाराशिव आदि गुफाएँ, जिनमें हिन्दू, बौद्ध एवं जैन धर्म की पुराणकथाओं और धर्मप्रवर्तकों,देवताओं की प्रस्तर एवं पाषाण मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं। ऐतिहासिक महत्व के किले जैसे देवगिरी, नलदुर्ग, परण्डा,रायगढ़, राजगढ, तोरणा, सज्जनगढ, कोंढाणाआदि। पंढरपुर, तुळजापुर, नांदेड जैसे धार्मिक क्षेत्र आदि विदेशियों को भीआकर्षित करते हैं।

इन स्थानों को देखने के लिए हजारों यात्री हर वर्ष महाराष्ट्र में आते रहते हैं। इन यात्रियों के लिए दर्शनीय स्थानों कीजानकारी उन-उनकी भाषा में देनेवाले स्थानीय मार्गदर्शकों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। यदि आपका किसीभाषा पर अधिकार है तो आप घर बैठे डॉलरों में कमाई कर सकते है। बस! आपको एक ही काम करना है,अपने क्षेत्र की जानकारी मातृभाषा से विदेशी भाषा में अनुदित करके पर्यटकों के सामने देनी मात्र है।

यदि आपका सम्बन्ध किसी यात्रा-कम्पनी से है तो आपकी प्रतिभा में चार चाँद लग सकते हैं। केसरी टूर्स, चौधरीयात्रा कम्पनी, कॉक्स अॅण्ड किंग्ज जैसी कम्पनियों में अपने बलबूते पर बड़े ओहदे तक अनुवाद की कुशलता केमाध्यम से पहुँचा जा सकता है। यदि यह काम आपकी रूचि का है, तो क्या कहने! पर्यटन मार्गदर्शिका तयार करना,देश-विदेश की सांस्कृतिक भूमिका और इतिहास को समझाना तथा प्रत्यक्ष रीति से पर्यटक से बातें करना आपकोपूँजी दिला सकता है।

2) फिल्मों और टी. व्ही. के क्षेत्र में :-

गार्जिएन एडिनबरो अन्तर्राष्ट्रीय टेलीव्हिजन फेस्टीव्हल में सर मर्डोक जूनियर ने चेतावनी देते हुए कहा था कि "भारतीय भाषाएँ विशेषकर हिंदी आज विश्व स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी को अपदस्थ कर सकती है। हॉलीवूड की लगभग सभी फिल्में हिंदी डबिंग (अनुवाद) के माध्यम से भारतवर्ष एवं भारतीय उपमहाद्वीप में लोकप्रिय हो रही हैं। इसेडबिंग आर्टिस्ट के साथ-साथ अनुवादक का भी महत्व अत्यन्त बढ़ गया है। 'स्लमडॉग मिलेनियर' और 'लाइफ़ ऑफपाय' जैसी फिल्में भी बेतहशा प्रशंसा बटोर रही हैं। सर्वसाधारण दर्शक अंग्रेजी से कतराता है, पर हॉलीवूड की डबफिल्में को देखता भी है और सराहता भी है।

उदा-टायटैनिक, ज्युरासिक पार्क, ॲनाकोण्डा, कराटे किड, पर्लहार्बरआदि। दक्षिण भारतीय भाषाओं की फिल्में भी डब होकर हिन्दी में प्रदर्शित हो रही है, जिनका अपना अलग प्रेक्षक वर्गहै। जैसे पुष्पा, केजीएफ़, कान्तारा आदि।

टी.व्ही. के सैंकड़ों चैनलों के द्वारा भी डबिंग का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियटी.व्ही.धारावाहिक, झट से प्रादेशिक भाषाओं में डब करके दिखाए जाते हैं। जैसे रामायण, महाभारत, झाँसी की रानी,जय हनुमान, चंद्रकांता आदि। साथ ही अनेक प्रादेशिक भाषाओं में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को हिन्दी में अनुदितकर राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया जाता है। जैसे सोन पावलं, तेनालीरामा, मालगुडी डेज आदि।

कुछ टी.व्ही. नेटवर्क तो ऐसे है, जिन्होंने अनेक भाषाओं में चैनलों को प्रसारित करनी की ठानी है। जैसे इ-मराठी,इ-गुजराती, इ-कन्नड, इ-बांग्ला, इ-उर्दु, ज़ी-मराठी, ज़ी-गुजराती, ज़ी-कन्नड, ज़ी-बांग्ला, ज़ी-उर्दू आदि।

3) पत्रकारिता एवं जन संचार माध्यमों के क्षेत्र में :-

पत्रकारिता के क्षेत्र में अर्थात् जनसंचार माध्यमों में मुद्रित माध्यम, श्राव्य माध्यम, दृक -श्राव्य माध्यम तथा संगणक, आंतरजाल (Internet), कृत्रिम मेधा (ArtificialIntelligence) आदि ने सूचनाओं की क्रान्ति ही कर डाली है। इस क्षेत्र में समाचार, विज्ञापन, साक्षात्कार,प्रतिक्रियाएँ, सम्पादकीय, फिचर, राजनेताओं के भाषण आदि का झट से अनुवाद करना ही पडता है। यह अनुवादकभी-कभी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा से राष्ट्रभाषा में तथा राष्ट्रभाषा से अंतर्राष्ट्रीय भाषा में साथ ही राष्ट्रभाषा से प्रादेशिकभाषाओं में एवं प्रादेशिक भाषाओं से राष्ट्रभाषा में अनुवाद करना अनिवार्य हो जाता है।

आज पत्रकारिता का क्षेत्र पर्याप्त विकसित हुआ है। स्थानिक समाचार पत्रों को भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की समाचारएजेन्सियों पर निर्भर रहना ही पडता है। कई बार विदेशी समाचार पत्रों में छपे समाचार का अनुवाद करना अनिवार्य हो जाता है। यदि अनुवाद न हो तो महत्वपूर्ण वैश्विक समाचार हम तक पहुँचेगा कैसे ? समाचार पत्र एक मुद्रित माध्यमहै। उसी प्रकार रेडिओ एक श्राव्य माध्यम तथा टी.व्ही. दृक्श्राव्य माध्यम है।

रेडिओ मे भी एफ. एम. चैनलों द्वारा अनुवादक को नये अवसर प्रदान किये हैं। समाचार चैनलों में तो एक ही समयअनेक भाषाओं में बतियाने वाले युवाओं को ही अवसर दिया जाता है। इस क्षेत्र में बहुभाषिक व्यक्तियों को रोजगारके अनेक अवसर प्राप्त होते हैं।

4) दुभाषिये के रुप में :-

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विश्व के प्रत्येक देश से, प्रत्येक राष्ट्र का अन्य राष्ट्र से कार्य-कलाप, क्रिया-व्यापार तथाअन्य अन्तार्कियाएँ पर्याप्त रूप में वर्द्धित होने लगीं हैं।हर क्षेत्र का परिवेश दूसरे क्षेत्र के परिवेश से आशातीत मात्रा में प्रभावित होने लगा है। व्यापार के लिए पूँजी-निवेशके आर्थिक सम्बन्ध, राजनीतिक सम्बन्ध, प्रशासकीय सम्बन्ध आदि के कारण राजनेताओं, व्यापारियों, प्रशासकीय अधिकारियों, स्थानिक व्यापारियों को अपने-अपने देश का प्रतिनिधित्व करना पडता है, ऐसे में इन लोगों को उनव्यक्तियों की आवश्यकता होती है, जिन्हें दुभाषिये कहा जाता है। दुभाषिये ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें कम-से-कम दोभाषाओं का ज्ञान होता है और जो इस प्रकार के सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों के विचार अनुदित करकेएक-दूसरे को समझा सकते हैं। इस कार्य में अंग्रेजी के साथ-साथ जापानी, कोरियन, मंडेरियन, जर्मन, इतालवी,रूसी, ग्रीक, फान्सीसी, हंगेरीयन, पोलिश भाषाओं का उपयोग किया जाता है। इस कार्य के लिए अनेक पाठ्यक्रमभी विविध विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है।

5) प्रशासकीय कामकाज में :-

भारतवर्ष में राष्ट्र स्तर पर प्रशासकीय कार्य अंग्रेजी तथा हिन्दी में होते हैं। साथ ही प्रादेशिक स्तरों पर अंग्रेजी एवंक्षेत्रीय भाषाओं में प्रशासकीय कार्य होते हैं। इस कार्य में सबसे पेचीदा स्थिति तब होती है,

जब कोई पत्र, जो क्षेत्रीयभाषा में लिखा होता है, केन्द्र सरकार के कार्यालय में पहुँचता है। ऐसे में अनुवाद की सहायता के बिना प्रशासककाई भी निर्णय नहीं ले सकते। इस प्रकार का अनुवाद करना बड़ा दुरूह होता है। इस क्षेत्र में भी अनुवाद के लिएरोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

6) तकनीकी जानकारी के क्षेत्र में :-

वैश्वीकरण के कारण प्रत्येक देश अपने उत्पादों को अन्य देशों में बेच सकता है। इन उत्पादों के साथ उनके उपयोगके मैन्यूअल तैयार किये जाते हैं। जिन देशों में ये उत्पाद बेचे जाते हैं, उनमें प्रचार के लिए अंग्रेजी भाषा के साथसाथ वहाँ की भाषाओं में भी मैन्युअल छापने पड़ते हैं। उदाहरणार्थ - नोकिया के उत्पाद के मैन्युअल डच भाषा मेंभी अनुदित कर अंग्रेज़ी और हिन्दी में भी छापे जाते हैं। उसी प्रकार सोनी के जापानी से अनुदित किये जाते हैं। मर्सिडिजके जर्मन भाषा से। इस क्षेत्र में भी अनुवादक के लिए रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

7) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का क्षेत्र :-

डंकेल या गैट्स नाम से जो करार अनुबंधित किया है, उसके जरिये भारतवर्ष में हजारों बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने प्रवेश और निवेशकिया है। अपनी कम्पनी का उत्पाद उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक बहुराष्ट्रीय कम्पनी को प्रादेशिक सम्पर्कभाषाओं और जनभाषाओं का सहारा लेना ही पड़ता है। ऐसे में अनुवादक के रूप में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में रोजगारआसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

8) राजभाषा अधिकारी के रूप में :-

भारतवर्ष एक खण्डप्राय देश है, जिसमें 24 मान्यताप्राप्त राजभाषाओं का प्रयोग प्रशासकीय कामकाज में हो रहाहै। वास्तव में भारत की बहुभाषिकता ने ही अनुवाद की भूमिका को बहुमुखी और बहुआयामी बनाया है। केंद्र सरकारऔर राज्य सरकार के बीचअंग्रेजी, हिन्दी एवं अन्य राजभाषाओं के एक दूसरे में अनुवाद करना अनिवार्य हो गयाहै। इसीलिए राजभाषा सम्बन्धी पाठ्यक्रम पूर्ण कर के कोई भी राजभाषा अधिकारी बन सकता है।

9) राष्ट्रीयीकृत बैंकों के क्षेत्र :-

वैश्वीकरण की प्रतियोगिता के फलस्वरूप प्रत्येक बैंक को अपने स्तर को बनाये रखने के लिए अपने निवेशकोंसाथ उनकी भाषा में व्यवहार करना अनिवार्य हो गया है। देश के हर क्षेत्र के साथ, ही ग्राहक के साथ व्यवहार करनेके लिए तथा अपने बैंक का प्रतिनिधित्व करने हेतु, मार्केटींग करने हेतु, ग्राहकों से सम्पर्क करने हेतु, निवेश बढ़ानेहेतु अनुवादकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी कारण इस क्षेत्र में भी रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

10) साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद क्षेत्र :-

एक भाषा की महत्वपूर्ण रचना का अन्य भाषाओं में अनुवाद होना आज कल साधारण-सी बात हो गयीहै। साहित्य की प्रत्येक विधा चाहे वह कहानी, उपन्यास, कविता, महाकाव्य, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी,आत्मकथा, डायरी, निबन्ध, ललित निबन्ध कोई भी हो पुरस्कृत होते ही अन्य भाषा में अनुदित हो जाती है। नोबिलपुरकार, बुकर पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरकार से सम्मानित रचनाओं का अन्य भाषा में अनुवादशीघ्र ही उपलब्ध हो रहा है। फिर भी अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं का अनुवाद अभी तक नहीं हो पाया है, अतः इसक्षेत्र में भी रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। जिससे रॉयल्टी कमाने के अनेक अवसर भी हैं।

11) न्याय और विधि का क्षेत्र :-

उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के प्रशासकीय कामकाज में अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता आया है।किन्तु सत्र न्यायालय, जिला न्यायालय से लेकर अन्त तक सारे मुकदमें प्रादेशिक भाषाओं में ही लड़े जाते हैं। कागजप्रादेशिक भाषा में तथा पैरवी एवं निर्णय अंग्रेजी भाषा में इस प्रकार बार-बार प्रादेशिक भाषा से अंग्रेजी तथा अंग्रेजीसे प्रादेशिक भाषा में अनुवाद करने ही पड़ते हैं। अतः इस क्षेत्र में भी अनुवादक

के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

12) वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र :-

यह सिद्ध हो चुका है कि, मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से ही छात्रका सम्पूर्ण विकास हो सकता है। किन्तुहमारा सारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान अंग्रेजी में ही उपलब्ध है। ऐसे में कम-से-कम प्राथमिक शिक्षा में तो अंग्रेजीसे प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद करना अत्यन्त आवश्यक है। प्राकृतिक विज्ञान हो या सामाजिक विज्ञान सभीज्ञानशाखाओं का भारतीय भाषाओं में अनुवाद होना उज्ज्वल भविष्य के लिए अनिवार्य है। अतः इस क्षेत्र में भी अनुवादके अनन्त अवसर उपलब्ध हैं।

13) आशु अनुवाद के रूप में :-

वास्तव में अनुवाद ही द्विभाषिक सम्प्रेषण का मूलाधार है। विभिन्न भाषा-भाषी जनसमुदाय के मध्य वाचिक सम्वादके लिए अनुवाद के अलावा कोई विकल्प है ही नहीं, विशेषकर ऐसे सन्दर्भ में जहाँ पर त्वरीत सम्प्रेषण की अनिवार्यताहो। वहाँ आशु अनुवाद के द्वारा काम चल जाता है। राजनीतिक बातचीत, नीति-निर्धारण, गोपनीय बातें, विभिन्न देशोंके साथ समझौते आदि आशु अनुवाद के माध्यम से ही सम्पन्न होते हैं। इस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु आशु अनुवादकी पदविका उत्तीर्ण करने के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ, युनेस्को, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, दक्षेस, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदिमें रोजगार के भरपूर अवसर उपलब्ध हैं।

14) शैक्षिक क्षेत्र में :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने अध्यापकों को एक सुवर्ण अवसर प्रदान किया है।अध्यापन को अधिकसुरुचिपूर्ण बनाने हेतु बहुभाषी अध्यापकों की आवश्यकता अधिक है। क्योंकि अन्तर्विद्याशाखीय अध्ययन के लिएअनुवाद की अत्यन्त अनिवार्यता है। अनेक बार अध्यापक को अध्यापन की सामग्री हिन्दी या अंग्रेजी में अनुदित करनीपडती है। इस क्षेत्र में भी रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

ISSN 2229-4406

Published, Printed, Owned by Sow. Mahananda B. Kamble & Edited by Prin. Dr. Haridas Fere & Printed at Indo Vision Offset, Binding & Published by Indo Asian Publication 'Gyandev - Parvati', R-9 / 139/6, Near Vishal School, L.I.C. Colony, Pragati Nagar, Latur. Dist. Latur-413531 (M.S.) India.

ISSN 2229-4406

Editor In Chief : Prin. Dr. Haridas Fere